

Chapter 6

Question: How can we create a happy world when there is suffering?

Krishnamurti: You did not listen to what was being said. You were occupied with your question. While I was talking, your mind was wondering how you were going to ask your question, how you were going to put it into words, so your mind was occupied with what you were going to ask, and you did not really listen. There was no pause, no gap, between when I stopped and your question. You immediately jumped into it—which means, really, you did not listen, you did not see the importance of what I was saying, you were not paying attention. It is really important to know how to listen to people—to the old man or to your sister or to your brother or to the man who goes by—which means really that your mind is quiet, so that a new idea, a new feeling, a new perception can penetrate. What I was saying is really very complex, very difficult. You did not let that penetrate, enter your mind, because your mind was occupied with, 'I must ask a question. How shall I put it?' Or, you were looking out of the window—it is nice to look out because the trees are beautiful—but then you saw somebody come in, and your mind became agitated like those leaves on the tree. So, please, as I suggested, write out your questions, and when I finish talking, wait a minute

प्रश्न : जब तक चारों ओर इतना दुख है तब तक हम सुखी संसार कैसे बना सकते हैं?

कृष्णमूर्ति : जो कुछ अभी कहा जा रहा था उसे आपने ध्यान से सुना नहीं। आप अपने ही प्रश्न में उलझे रहे। जिस समय मैं बोल रहा था आपका मन इस उधेड़-बुन में खोया था कि अपना प्रश्न किस प्रकार से पूछा जाए, किन शब्दों का प्रयोग किया जाए। इस प्रकार आपका मन सवाल बुनने में खोया था और वास्तव में आपने कुछ सुना ही नहीं। मेरी बात के खत्म होने और आपके प्रश्न पूछे जाने के बीच कोई विराम, कोई अंतराल नहीं था। आप तुरंत प्रश्न ले कर आ गए—इसका मतलब है कि आपने सचमुच कुछ सुना नहीं, मैं उस समय जो कुछ कह रहा था वह आपको महत्वपूर्ण नहीं लगा और आप उस पर ध्यान नहीं दे पाए। यह जानना वास्तव में अत्यंत आवश्यक है कि लोगों को किस प्रकार ध्यान से सुना जाता है—किसी बड़े व्यक्ति के शब्दों को या आपके भाई व आपकी बहन के शब्दों को या सड़क से जा रहे किसी व्यक्ति की आवाज़ को। इसका तात्पर्य है कि जब आप सुन रहे हों तो आपका मन शांत हो, ताकि कोई नयी कल्पना, नयी अनुभूति, नयी समझ आपके भीतर जा सके। मैं जो कुछ कह रहा था वह सचमुच बहुत जटिल और कठिन है। उसे आपने यह अवसर नहीं दिया कि आपके मन को भेदकर वह भीतर आ सके, क्योंकि आपका मन तो इस उधेड़बुन में था कि मुझे एक सवाल तो ज़रूर पूछना चाहिए, उसे मैं किन शब्दों में रखूं। या आप खिड़की के बाहर कुछ देख रहे थे। वहां देखना बहुत अच्छी बात है क्योंकि वहां से दिखाई पड़ने वाले वृक्ष सुंदर हैं—पर तभी आपने देखा कि कोई कमरे में आ रहा है, और आपका मन भी उस पेड़ पर लगी पत्तियों जैसा चंचल हो उठा। इसलिए, जैसा कि मैं अनुरोध कर चुका हूं, आप कृपया अपने प्रश्नों को लिख कर रख लिया करें और जब मेरा बोलना समाप्त हो जाए तो एक मिनट इंतज़ार करें और फिर अपना प्रश्न पढ़ें। तब मैं जो कह रहा हूं उसे आपका मन ठीक से सुन सकेगा और इस प्रकार आप सचमुच ध्यानपूर्वक सुन सकेंगे। मुझे लगता है कि यदि हमें ध्यानपूर्वक सुनना आ जाए तो हमें ध्यान देने के लिए हर समय प्रयास नहीं करना पड़ेगा और हम बहुत कुछ सीख सकेंगे।

Chapter 6

and then read your question. Then your mind will follow what I am saying, so that you begin to really listen. I think if we know how to listen, we will learn much more than all the time struggling to pay attention.

Someone asked, 'What is a beautiful world, and how can one create it when there is so much suffering?' Let us think together why it is that most of us want to do something. We think that activity, doing something, is more important than understanding what the problem is, what it is all about. You see a beggar, and your instinct is to give him something. But what generally happens is that, after giving, you forget all about it. You do not understand, you do not inquire into the whole question of poverty, here and everywhere in the world. You know there are poor people, and you also know that there is inward poverty. You may have a great deal of money, you may live in a luxurious house, but inwardly you may be as poor as a beggar. If you realize this, you are afraid, and so you begin to read books, to acquire knowledge. It is like a man who covers himself with jewels and lives in a palace and thinks that he is rich.

You learn to read or quote a great many spiritual teachers and the Bhagavad-Gita. You may want to do good, but you do not stop at that. You want to help the whole world and

एक व्यक्ति ने प्रश्न किया है, "एक सुंदर संसार क्या है, और जब चारों ओर इतना दुख है तो इसे किस प्रकार सुंदर बनाया जा सकता है?" हम इस बारे में मिलकर सोचें कि हम सभी लोग कुछ-न-कुछ करना क्यों चाहते हैं? हमें लगता है कि सक्रिय रहना, कुछ-न-कुछ करते रहना, समस्या को समझने से कहीं अधिक ज़रूरी है। आप एक भिखारी को देखते हैं और आपमें यह प्रेरणा जागती है कि उसे आप कुछ दें। प्रायः यही होता है कि उसे कुछ देने के बाद आप इस बारे में सब कुछ भूल जाते हैं। आप गरीबी के प्रश्न को उसके समूचे रूप में नहीं समझते, आप उस बारे में, यहां और संसार में हर तरफ व्याप्त गरीबी के बारे में खोजबीन नहीं करते। आप जानते हैं कि लोग गरीब हैं, और आपको पता है कि हमारे भीतर भी गरीबी होती है। हो सकता है आपके पास ढेर सारा पैसा हो, आप सुख-सुविधापूर्ण घर में रहते हों, पर फिर भी यह संभव है कि भीतर में आप किसी भिखारी की तरह ही दरिद्र हों। यदि आपको इसकी अनुभूति होती है, तो आप भयभीत हो जाते हैं और किताबें पढ़ने लगते हैं, ज्ञान एकत्र करने लगते हैं। यह वैसी ही बात है जैसे कोई अपने शरीर को आभूषणों से लादे रहता है, महलों में रहता है और सोचता है कि वह समृद्ध है।

आप अनेक महान आध्यात्मिक शिक्षकों के वचन और भगवद्गीता आदि पढ़ना सीखते हैं और उनके उद्धरण देने लगते हैं। आप कुछ भला करना चाहते हैं पर उतने पर ही नहीं रुकते। आप सारे संसार की मदद करना चाहते हैं और उसके क्लेशों को समाप्त कर

Chapter 6

put an end to the misery in the world. So you join groups, you join a society, or you form an institution. You become a secretary, you pay dues, and you gradually get lost in some organization. Actually, you do very little good in the world.

To do good really, you must understand yourself as you are, in the very process of doing good. Any action you do should help you to understand yourself, to go into yourself. Then in the transformation of yourself, in the changing of yourself, there is a possibility of bringing about a different world. Merely to do good or to join a society for doing good, seems to be superficial. But if, in the very action of doing good, you begin to understand the complications of life, then out of that there can be a change, there can be a world in which suffering will not exist.

Question: Why is stealing considered to be bad?

Krishnamurti: Why do you think stealing is bad? You have a watch and I take it away from you. Do you think that is right? I take away something from you which belongs to you; which your father has given to you; or which you have got by some other means. I take it away from you without telling you; without your knowing it. Is that a good action? It may be that you have got the watch because of your greed.

देना चाहते हैं। इसलिए आप किन्हीं समूहों आदि से जुड़ जाते हैं, आप किसी समाज से जुड़ जाते हैं, या कोई संस्था खड़ी करते हैं। आप किसी संस्था के सचिव हो जाते हैं, उसकी सदस्यता की निश्चित राशि जमा करते रहते हैं और धीरे-धीरे पूर्णतः उसमें खो जाते हैं। वस्तुतः आप संसार में नाम मात्र का ही कुछ भला कर पाते हैं।

वस्तुतः भलाई करने के लिए, भला करने की प्रक्रिया के दौरान आप जो हैं उसे गहराई से समझना होगा। आप जो भी काम करते हैं, उससे आपको स्वयं को समझने में मदद मिलनी चाहिए, अपने भीतर जाने में सहायता मिलनी चाहिए। तब, आपके रूपांतरण के साथ, आपके भीतर बदलाव आने के साथ एक अलग तरह के संसार के निर्माण की संभावना होती है। केवल कुछ भलाई कर लेना, या भलाई करने के लिए किसी समाज से जुड़ जाना उथली बात लगती है। लेकिन भला करने के काम में ही यदि आप जीवन की जटिलताओं को समझने लगते हैं तो उस समझ से बदलाव आ सकता है, एक ऐसा संसार सामने आ सकता है जहां दुख हो ही न।

प्रश्न : चोरी करने को बुरा क्यों समझा जाता है?

कृष्णमूर्ति : आप चोरी करने को बुरा क्यों समझते हैं? आपके पास एक घड़ी है और मैं उसे छीन लेता हूँ। क्या आपकी दृष्टि में यह ठीक है? मैं आपसे आपकी कोई चीज़ ले लेता हूँ, जो आपके पिता ने आपको दी है, या कहीं और से आपको मिली है। मैं इसे आपसे कहे बिना, आपको पता चले बिना ले लेता हूँ। क्या यह सही काम है? हो सकता है कि लोभवश ही आपने इस घड़ी को कहीं से पाया हो। किंतु मैं भी इतना ही लालची हूँ, इतना ही लोभी हूँ इसलिए मैं आपसे इसे छीन लेता हूँ। इसे चोरी कहा जाता है। जाहिर सी बात है कि यह कोई अच्छा काम नहीं है, कि अच्छा काम है? आप देखते हैं कि कुछ लड़के-लड़कियों में चोरी करने की आदत होती है। बड़े लोग भी ऐसा

Chapter 6

But I am equally greedy, equally acquisitive, so I take it away from you. This is called stealing. Obviously it is not right, is it? You see, there are some boys and girls who steal as a habit. Older people do that too; though they have money, though they have things which they really need, the desire to steal overcomes them. That is a disease. It is a kind of mental perversion, an aberration, a mental twist. Without understanding that twist, the older people generally punish or hurt you and say that you must not steal, that it is very bad, and that you may be put in prison. They frighten you; and so the twist becomes more twisted, hidden, darker. But if there was an explanation, if the parent or the teacher took the trouble to explain and not condemn, not threaten, then perhaps that twist might disappear. One of the difficulties is that the teachers and the parents have no time, they have no patience; they have so many other children; they want a result, a quick result, and so, they threaten and hope that the boy will stop stealing. But it does not generally happen that way. The boy goes on quietly stealing.

I think, in a school of this kind, the teachers should explain all these things to you. You spend an hour in a class reading mathematics or geography. Why not spend ten minutes out of that time in discussing these problems? As you begin to talk them

किया करते हैं, हालांकि उनके पास रुपये-पैसे होते हैं, और वे सभी चीज़ें होती हैं जिनकी उन्हें ज़रूरत है, लेकिन चोरी करने की आदत उन पर हावी हो जाती है। वह एक तरह की बीमारी ही होती है। यह एक तरह का मनोविकार, मानसिक उलझन या गुत्थी ही है। उस उलझन को समझे बिना ही बड़े लोग आपको दंड देते हैं या आपको चोट पहुंचाते हैं और कहते हैं कि आपको चोरी नहीं करनी चाहिए, यह एक बहुत बुरी बात है और इसके लिए आपको जेल में भेजा जा सकता है। वे आपको भय दिखाते हैं और भय से यह उलझाव और जटिल हो जाता है और धुंधला, गहरा होने लगता है। यदि आपको इस बारे में समझाया जाता, यदि माता-पिता या शिक्षक थोड़ा कष्ट उठाकर आपको ठीक से स्पष्ट करते और इसकी निंदा न करते हुए, आपको डराए-धमकाए बिना समझाते तो शायद यह उलझाव दूर हो सकता है। एक कठिनाई यह है कि शिक्षकों और माता-पिता के पास इतना समय नहीं होता, उनमें इतना धीरज भी नहीं होता, उनके पास और भी कई बच्चे हैं, वे अच्छा परिणाम चाहते हैं, और उसे यथासंभव शीघ्र ही पाना चाहते हैं और इसलिए वे डराते हैं और उम्मीद करने लगते हैं कि बच्चे चोरी करना बंद कर देंगे। लेकिन प्रायः ऐसा नहीं होता। बच्चे चुपके-चुपके चोरी करना जारी रखते हैं।

मुझे लगता है कि इस तरह के विद्यालय में शिक्षकों को आपको ये सारी चीज़ें समझानी चाहिए। आप अपनी कक्षा में गणित या भूगोल पढ़ते हुए घंटे भर का समय बित्ता देते हैं। उसमें से दस मिनट निकाल कर आप उनसे इन समस्याओं की चर्चा क्यों नहीं करते? जब आप उनसे इन सारी चीज़ों पर गंभीरता से बात करने लगेंगे तो शिक्षकों और छात्रों की समझ बढ़ेगी, वे समझदार होने लगेंगे। मैं यह नहीं कहता कि शिक्षक

Chapter 6

over, the teachers as well as the students become intelligent. I am not saying that the teachers are not intelligent, but they become more intelligent.

समझदार नहीं हैं, पर वे इससे और भी अधिक समझदार होंगे।

Question: What is a soul?

प्रश्न : आत्मा क्या है?

Krishnamurti: You think you have a soul, don't you? How do you know? You see, that is one of your difficulties. You accept things from your parents, and you repeat them again and again, and you say, 'Yes, I have got a soul.'

कृष्णमूर्ति : आप सोचते हैं आपमें आत्मा है। आपको कैसे पता? देखिए, यही आपकी समस्या है। आप अपने माता-पिता से अनेक बातें सीख लेते हैं और उन्हें बार-बार दुहराते रहते हैं और फिर आप कहने लगते हैं, "हां, मेरे भीतर आत्मा है"।

What is a soul? Let us go into it slowly, step by step, and you will see something. In Banaras, which is a city of the dead, so many people die. You have also seen a dead bird. The leaf on a tree, which is green, lovely, dancing, tender, withers and is blown away. Seeing all this, man says, 'Everything goes, everything disappears, nothing is permanent.' Black hair becomes gray; early in life you can walk ten miles or more, but later on, you can walk only two or three miles. A tree which has lived for two or three hundred years is struck by lightning and disappears.

आत्मा क्या है? आइए इस बारे में धीरे-धीरे पता लगाएं, और तब आपको यह स्पष्ट होने लगेगा। बनारस में, जो महाशमशान कहलाता है, कितने ही लोग मरते हैं। आपने भी कभी कोई मृत पक्षी देखा होगा। एक पेड़ पर लगी हरी पत्ती, जो अभी सुंदर है, नाजुक है और नृत्य कर रही है, सूखकर झर जाती है। इस सब को देख कर मनुष्य कहता है: 'सब कुछ विदा हो जाता है, सब कुछ खो जाता है, कुछ भी स्थायी नहीं है।' काले बाल सफेद हो जाते हैं, उम्र की शुरुआत में आप दस मील तक या उससे भी अधिक चल सकते हैं, लेकिन बाद में आप बस तीन मील ही चल पाते हैं। दौ सौ या तीन सौ बरसों से जीवित वृक्ष पर बिजली गिरती है और वह समाप्त हो जाता है।

There are trees in California which are three to five thousand years old, yet they too will die. Everything disappears; very few things are permanent.

कैलीफोर्निया में ऐसे भी कई वृक्ष हैं जो तीन से पांच हजार साल की आयु के हैं, पर वे भी मर जाएंगे। सब कुछ मिट जाता है, इनी-गिनी चीजें ही स्थायी रह पाती हैं।

Seeing this extraordinary state of impermanence, man

अस्थायित्व की ऐसी आश्चर्यजनक दशा को देख कर मनुष्य कहता है, "कुछ-न-कुछ तो ऐसा होना चाहिए

Chapter 6

says, 'There must be something permanent, something which does not die, which is not corrupted by time.' And he begins to invent things that have permanency, creating out of his own mind God, the soul, atma, paramatma and so on. He himself sees that he is impermanent, so he longs for something which is permanent, which will never die, which no thief can take away. So his mind speculates, and in his fear he invents, he imagines. He says there is a soul which cannot be destroyed. He says, 'My body may go, I may die, I may be eaten away by worms; but there is something in me which is imperishable.' He states that, and then he worships that invention; he builds theories round it, he writes books and quarrels about it, but he never finds out for himself if there is really anything permanent. He never says, 'I know everything is impermanent. I too will die. I too will grow old, and disease and decay will take place. But I want to find out if there is something beyond.'

So let me not invent, let me not say there is a soul or there is atma or there is this and that. But let me find out, let me inquire.' If only I make up my mind to find out, to inquire, then through that inquiry, through understanding my fears, my greed, through knowing myself, I may go deeper and

जो कि स्थायी हो, जिसकी मृत्यु न हो, जो काल के स्पर्श से दूषित न होता हो"। और फिर वह ऐसी चीज़ों का आविष्कार करने लगता है जिनमें स्थायित्व हो, अपने स्वयं के मन से वह ईश्वर, आत्मा, परमात्मा आदि की सृष्टि कर लेता है। उसे यह दिखाई देता है कि वह तो अस्थायी है, इसलिए वह किसी ऐसी चीज़ की अभिलाषा करने लगता है जो स्थायी हो, जिसकी कभी मृत्यु न हो, जिसे कोई चुरा न सके। इस प्रकार उसका मन तरह-तरह के अनुमान लगाता है, और भय के चलते वह कल्पनाएं करने लगता है, चीज़ों को गढ़ने लगता है। वह कहने लगता है, आत्मा ही एक ऐसी चीज़ है जिसे मिटाया नहीं जा सकता। वह कहता है, "मेरा शरीर तो मिट जाएगा, मैं मर जाऊंगा, मुझे शायद कीड़-मकोड़े खा जाएंगे, पर मुझमें कोई ऐसी चीज़ अवश्य है जो अविनाशी है"। वह ऐसा वक्तव्य देता है, और वह अपने ही उस आविष्कार की पूजा करता है, वह उसके बारे में सिद्धांत रचता है, वह उस बारे में किताबें लिखता है, वाद-विवाद करता है, लेकिन वह इसका पता लगाने की कोशिश कभी नहीं करता कि क्या सचमुच कहीं कुछ स्थायी है? वह ऐसा कभी नहीं कहता, "मैं जानता हूँ कि प्रत्येक चीज़ अस्थायी है। मैं भी मरूंगा। मैं भी बूढ़ा हो जाऊंगा, रोग और जरा से सामना होगा। लेकिन मैं यह अवश्य पता लगाना चाहता हूँ कि क्या इससे परे भी कुछ है या नहीं।

अतः मैं कल्पनाएं न करूँ, मैं यह न कहूँ कि कोई आत्मा है या जीवात्मा या कुछ और। बल्कि इस बारे में खोजबीन करूँ, पता लगाऊँ। यदि खोजबीन करने के लिए मैं तैयार हूँ तो इस अन्वेषण के जरिए, अपने डर और लोभ आदि को समझकर, अपने आप को समझकर, मैं और गहरे, अधिक गहराई तक जा सकता हूँ और किसी ऐसी चीज़ का पता लगा सकता हूँ जो केवल शब्दों में नहीं बंध सकती।

Chapter 6

deeper and find out something which is beyond mere words.

You say there is character, and that character may be the soul. But what are you? You have certain tendencies, have you not, certain idiosyncrasies, certain ways, certain desires; all that is in you. You say, 'I am all that, but if I die, what happens to me? There must be something which goes on and on.' But do not accept anything unless you have searched out, unless you have gone into it yourself. Unfortunately your mind is engaged, and you are not awakening the mind so that it can go into this problem. When you accept, when you believe, you have stopped inquiring. So, to really inquire requires a mind which is very wide awake. Such a mind is not possible if you are following an authority or if there is fear. If you merely accept, you will never find out.

Question: What is joy?

Krishnamurti: A little boy asks, 'What is joy?' I wonder why he asks! Either he does not know what joy is—which would be really very sad or he knows what joy is and wants to find out more about it. The boy won't understand what I am going to say because unfortunately I cannot speak Hindi, but will those who are responsible for that boy please explain carefully and help him to understand his question.

आप कहते हैं कि चरित्र ऐसी ही एक चीज़ है, और चरित्र ही आत्मा हो सकता है। परंतु आप क्या हैं? आपमें कुछ विशिष्ट प्रवृत्तियां हैं, हैं कि नहीं? कुछ खास व्यक्तिगत स्वभाव आदि हैं, कुछ अलग तौर-तरीके, पसंद-नापसंद और इच्छाएं यह सभी आपमें है। आप कहते हैं, "मैं वह सब कुछ हूँ, पर जब मैं मर जाऊंगा तो मेरा क्या होगा? कुछ तो ऐसा होना चाहिए जो हमेशा जीवित रहे।" किंतु बिना पूरी खोजबीन किये, बिना इस विषय में खुद से पता लगाए आप किसी भी बात को स्वीकार मत कीजिए। दुर्भाग्य से आपका मन इधर-उधर उलझा हुआ है और आप अपने मन को जाग्रत नहीं कर रहे हैं ताकि वह इस समस्या की जांच-पड़ताल अपने आप कर सके। जब आप किसी बात को मान लेते हैं, जब आप विश्वास करने लगते हैं तो आप जांच-पड़ताल करना छोड़ देते हैं। इसलिए, सच्चे अर्थों में खोजबीन करने के लिए यह आवश्यक है कि मन प्रखर रूप से जागा हुआ हो। लेकिन यदि आप किसी सत्ता के पीछे चल रहे हैं, या आप भयभीत हैं तो मन का इस दशा में होना संभव नहीं है। यदि आप मान्यताओं पर रुक जाते हैं तो आप खोज नहीं सकते।

प्रश्न : खुशी क्या है?

कृष्णमूर्ति : एक छोटा बालक पूछ रहा है 'खुशी क्या है?' मुझे आश्चर्य हो रहा है कि उसने ऐसा प्रश्न क्यों पूछा है! या तो वह नहीं जानता कि खुशी क्या चीज़ होती है, और यदि ऐसा है तो यह बड़ी ही दुखद बात होगी, या फिर वह जानता है कि खुशी क्या है और उस बारे में और अधिक जानने के लिए उत्सुक है। मैं जो कहने जा रहा हूँ उसे वह बालक नहीं समझ पाएगा क्योंकि मुझे अफसोस है कि मुझे हिंदी बोलना नहीं आता, लेकिन उस बालक की देखभाल की ज़िम्मेदारी जिन लोगों पर है वे मेहरबानी करके ध्यान से उसे यह सब समझाएं, और प्रश्न को समझने में उसकी मदद करें।

Chapter 6

The boy wants to know what joy is. When you see a flower, you have a feeling, have you not? When you see a sunset, when you see a nice person, when you see a beautiful painting, when you walk freely up a mountain and look from the top of the mountain into the valley and see the various shades, the sunshine, the houses, when you see somebody smile, have you not a feeling which you call joy? But the moment you say, 'I am joyous, I feel joy,' the thing is gone. Do you follow? The moment you say, 'I am happy,' you are no longer happy.

You see, we live in the past; we are already dying all the time; death is always with us. Duration is always our shadow because we are always living in the past moment. That is why we say, 'I have known joy, and it has gone, and I want to get it back.' So the problem is to be conscious, without the 'experiencing' which is becoming the past.

I am pursuing much too difficult a question. Sorry! When you enjoy something, when you write a poem or read a book, when you dance or do something else, just leave it at that; do not say, 'I must have more of it.' Because that will become greed, and therefore it is no longer a joy. Just be happy in the moment. If there is sunshine, enjoy it, do not say, 'I must have more.' If there

वह बच्चा यह जानना चाह रहा है कि खुशी क्या होती है। जब आप किसी फूल को देखते हैं तो आपमें एक भावना उठती है, उठती है न? जब आप सूर्यास्त देखते हैं, जब आप किसी भले मनुष्य को देखते हैं, जब आप कोई सुंदर चित्र देखते हैं, जब आप उत्साहपूर्वक किसी पहाड़ पर चढ़ जाते हैं और उसकी चोटी पर खड़े होकर नीचे घाटी की ओर देखते हैं, तथा विभिन्न वर्णों को, सूर्य की रोशनी को, घरों आदि को देखते हैं, जब आप किसी का मुस्कराता चेहरा देखते हैं तो ऐसी कोई भावना आपमें नहीं जाग उठती जिसे आप खुशी कहते हैं? पर जैसे ही आप कहते हैं, "मैं खुश हूँ, मुझे खुशी हो रही है", वैसे ही यह भावना जा चुकी होती है। आप समझ रहे हैं न? जिस पल आप यह कह देते हैं, "मैं प्रसन्न हूँ", आप प्रसन्न नहीं रह जाते हैं।

देखिए हम बीते हुए समय में जीते हैं। हम वैसे भी सारे समय मर रहे होते हैं; मौत हमारे साथ हमेशा रहती है। समय का अंतराल छाया की तरह हमसे लगा रहता है क्योंकि हम सदा बीते हुए क्षण में जिया करते हैं। इसलिए हम कहते हैं, "मैंने खुशी को महसूस किया है, पर अभी यह जा चुकी है, अब मैं इसे फिर से पाना चाहता हूँ।" अतः समस्या सचेत होने की है, 'अनुभव' से खाली होकर जागने की है क्योंकि 'अनुभव करना' अतीत में चले जाना है।

क्षमा करें मैंने जरा मुश्किल सवाल ले लिया है। जब आपको किसी चीज़ में आनंद आए, आप कोई कविता लिखें या कोई किताब पढ़ें, जब आप नाच उठें तो उसे वैसे ही रहने दें, यह न कहें, "मुझे और ज्यादा आनंद लेना चाहिए।" तब वह लोभ हो जाएगा और वह खुशी चली जाएगी। बस उस क्षण में प्रसन्न रहिए। यदि सूर्य की रोशनी आ रही है तो उसका आनंद लीजिए, यह मत कहिए, "मुझे और मिलनी चाहिए।" यदि बादल आ रहे हैं तो आने दीजिए उनका भी अपना एक विशेष सौंदर्य है। ऐसा न कहें, "काश आज का दिन थोड़ा और सुंदर होता।" 'और' की मांग आपको उदास कर देती है।

Chapter 6

are clouds, let them be; they also have their beauty. Do not say, 'I wish I had a more beautiful day.' What makes you miserable is the demand for more.

You listen to all this and wisely shake your heads, but it does not penetrate, does not go down deep. When you really stop demanding the 'more', when you are no longer acquisitive, joy will come without your seeking.

Question: What is pathos?

Krishnamurti: The boy wants to know what is pathos. I wonder why he is asking such a question. Probably somebody else has put it, through him. I wish the older people would not do that; they are really corrupting the young mind. Boys are not interested in all this, the feeling of sorrow, the feeling of being pathetic, hopeless. I am sure the boy does not feel these things. The boy has his own problems. He wants to know why a bird flies, why there is light on the water, why his teachers or his parents are cruel to him, why he is not liked, why he must study, why he should obey some stupid old man. Those are his problems, not pathos. He only wants to know what God is because it is so much talked of. Do encourage them to ask questions about their own problems.

If you only want to know the meaning of pathos, look it up in a dictionary, and you will

आप यह सब सुनते हैं और समझदार की तरह अपना सिर हिला देते हैं, पर यह सब आपके भीतर नहीं जा पाता, हृदय की गहराई तक नहीं पहुंच पाता। जब आप सचमुच और-और की मांग करना बंद कर देते हैं, जब आप लोभी नहीं रह जाते तो खुशी आपके पास खुद-ब-खुद, बिना आपके प्रयास किए आने लगती है।

प्रश्न : कारुणिकता क्या है?

कृष्णमूर्ति : एक बालक जानना चाहता है कि कारुणिकता क्या है? मुझे आश्चर्य हो रहा है कि वह ऐसा सवाल क्यों पूछ रहा है। शायद किसी और ने उसके माध्यम से यह प्रश्न पूछा है। मुझे उम्मीद है कि बड़े लोग ऐसा नहीं करेंगे, इस तरह तो वे युवाओं के मन को सचमुच दूषित कर देंगे। बच्चों की इस सब में कोई रुचि नहीं है, दुख की अनुभूति, दयनीय होने की भावना, हताशा आदि बातों में उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं है। मुझे पूरा विश्वास है कि बच्चे इन सारी बातों को महसूस नहीं करते। किसी बच्चे की अपनी कुछ समस्याएं ज़रूर होती हैं। वह यह जानने की इच्छा रखता है कि चिड़िया उड़ती क्यों है, जल चमकता क्यों है, उसके शिक्षक या माता-पिता उससे कठोर व्यवहार क्यों करते हैं, उसे कोई क्यों नहीं चाहता, उसे पढ़ना क्यों चाहिए, उसे किसी कमअवतल बूढ़े व्यक्ति की आज्ञा क्यों माननी पड़ती है, इत्यादि। ये सब उसकी समस्याएं होती हैं, न कि उसके हृदय में उठने वाली करुणाएं। ईश्वर के बारे में वह केवल इसलिए जानना चाहता है क्योंकि इस बारे में उसे बहुत कुछ सुनते रहना पड़ता है। उनकी अपनी समस्याओं के बारे में प्रश्न पूछने के लिए उन्हें उत्साहित ज़रूर करें।

और यदि आप कारुणिकता का अर्थ जानना ही चाहते हैं, तो किसी शब्दकोश में ढूंढ़ कर जान लें, वहां

Chapter 6

find the meaning; you do not need any explanation or definition from me. Our minds are so easily satisfied with definitions, and we think we have understood. Such a mind is very shallow.

Question: How can one listen to somebody?

Krishnamurti: You listen to somebody if you are interested. If you really want to know how to listen to somebody, you will find out. You are listening now, aren't you? I want to know how to listen. I ask you and I listen to you because you may tell me something, and from that I will learn, I will know how to listen. There is in that very action, in that very question, an indication of how to listen.

You ask me how to listen. Now, are you listening to what I am saying? Have you ever listened to a bird? Can you listen—not with a great strain, not with great effort, but just listen easily, happily, with interest—so that your whole attention is there?

We do not listen that way, we are only eager to get something out of somebody. When you read, when you talk, you want to get something out of it. So, you never listen easily, happily. And when you do listen, you translate it into what is suitable to you; or you translate it according to what you have already read, thus getting more and more

आपको इसका अर्थ मिल जाएगा, इसकी व्याख्या या परिभाषा कृपया मुझसे मत पूछिए। परिभाषाओं से हमारा मन कितनी जल्दी संतुष्ट हो जाता करता है, और हमें लगने लगता है कि हमने समझ लिया। इस प्रकार का मन बहुत उथला होता है।

प्रश्न : किसी मनुष्य की बातें ध्यानपूर्वक सुनने का क्या तरीका है?

कृष्णमूर्ति : जब आपकी रुचि होती है तो आप ध्यानपूर्वक सुनते हैं। यदि आप सचमुच यह जानना चाहते हैं कि किसी की बातों को ध्यानपूर्वक कैसे सुना जाता है तो आप अवश्य ही इसका तरीका ढूँढ़ लेंगे। इस समय आप सुन रहे हैं, सुन रहे हैं न? मैं यह जानना चाहता हूँ कि ध्यानपूर्वक कैसे सुना जाता है। मैं आपसे यह पूछता हूँ और ध्यानपूर्वक आपकी बातें सुनता हूँ क्योंकि आप मुझे कुछ बता सकते हैं, और उससे मैं कुछ सीख सकता हूँ। यह सीख सकता हूँ कि ध्यानपूर्वक कैसे सुना जाता है। यह करने में ही, इस सवाल को पूछने में ही, आप सुनना शुरू कर देते हैं।

आप मुझसे पूछते हैं कि ध्यानपूर्वक सुनने का क्या तरीका है। अब मैं जो कह रहा हूँ उसे आप ध्यान से सुन रहे हैं? क्या आपने कभी किसी चिड़िया की आवाज को ध्यान से सुना है? क्या आप इस तरह सुन सकते हैं कि आपको बहुत जोर न लगाना पड़े, बहुत अधिक कोशिश न करनी पड़े और आप बस आसानी से, खुशी-खुशी, मन लगा कर सुन सकें—इस तरह आपका सारा ध्यान उधर हो?

हम इस तरह से कभी नहीं सुनते, हमारी उत्सुकता किसी से कुछ पाने तक ही रहती है। जब आप पढ़ते हैं, जब आप बातें करते हैं तो आपकी चेष्टा यही रहती है कि उससे कुछ हासिल हो जाए। इसलिए आप कभी भी सहजता से, प्रसन्नता से नहीं सुन पाते। और यदि कभी सुन पाते हैं तो इसे ऐसे शब्दों में ढाल देते हैं जो आपके मन के हों, या ऐसे शब्दों में जिन्हें आपने पहले ही कहीं पढ़ा होता है। इस तरह आप और भी उलझते चले जाते हैं, और कभी शांति से, सहजता से, चुपचाप नहीं सुन पाते। क्या आपने कभी थोड़े समय के लिए भी चांद को देखा है?—बस निहारा भर है? या बहते हुए पानी को देखा है? ऐसे

Chapter 6

complicated, never listening peacefully, easily, quietly. Have you ever watched the moon for any length of time? —just watched it, or seen the waters go by, watched them without all the paraphernalia of sitting down and struggling to watch? If you do listen that way, you will hear much more, you will understand much more of what is being said. Even if you have to listen to your mathematics or geography or history, just listen; you will learn much more. And you will also find out if your teacher is teaching you properly, or if he is merely becoming a gramophone record, repeating the same thing over and over again. Listening is a great art which very few of us know.

January 11, 1954

नहीं कि आप तैयार होकर आलथी-पालथी मारकर बैठ गए और देखने की खूब जी-जान से कोशिश करने लगे बल्कि सहजता से, यूँ ही कभी देखा है? जब आप इतने ध्यान से सुनते हैं तो आप काफी अधिक सुन पाते हैं, जो कुछ कहा जा रहा है उसे आप बेहतर ढंग से समझ पाते हैं। यहां तक कि जब आपको अपने गणित, भूगोल या इतिहास के विषयों को भी सुनना पड़े तो बस सुनें, और आप बहुत कुछ सीख लेंगे। आप यह भी जान लेंगे कि आपके अध्यापक ठीक तरह से पढ़ा रहे हैं कि नहीं, या वे बस ग्रामोफोन के रिकॉर्ड की तरह एक ही बात को दुहरा रहे हैं। ध्यानपूर्वक सुनना एक बहुत बड़ी कला है जिसे हममें से बहुत कम लोग ही जानते हैं।

११ जनवरी, १९५४